

आज पुरानी राहों से.....

हिमाचल प्रदेश की प्राचीन लिपियां



संदेश

'लिपि' किसी भी भाषा एवं साहित्य की अभिव्यक्ति का माध्यम है। प्राचीनकाल से विभिन्न लिपियों का उद्भव, विकास तथा प्रचलन होता रहा है। इन लिपियों में समय-समय पर महत्त्वपूर्ण साहित्य की रचना भी हुई है।

हिमाचल प्रदेश के मंदिरों में प्रतिष्ठित देवी-देवताओं की मूर्तियों पर अनेक प्राचीन आलेख उत्कीर्ण हैं। प्राचीन पुरातात्त्विक स्थलों, ताम्रपत्रों, शिलालेखों में शारदा, ब्राह्मी, टाकरी, संस्कृत आदि लिपियों तथा पांडुलिपियों के रूप में अनेक महत्वपूर्ण दस्तावेज संरक्षित हैं।

प्राचीन लिपियों में उपलब्ध पुरा अभिलेखों में गौरवपूर्ण इतिहास, संस्कृति, भाषा एवं साहित्य तथा लोक परंपरा के अनेक प्रसंग बिखरे पड़े हैं जिनका संरक्षण, प्रलेखन तथा प्रकाशन अत्यन्त आवश्यक है ताकि हमारी भावी पीढ़ी अपने गौरवपूर्ण इतिहास और परंपरा का ज्ञान हासिल कर सके।

जय राम ठाकुर
मुख्यमंत्री
हिमाचल प्रदेश



संदेश

लोक कला, संस्कृति, भाषा एवं साहित्य के उद्भव, विकास और प्रचार-प्रसार में लिपियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इन लिपियों में लिखित हस्तलेखों में ज्ञान-विज्ञान का अक्षुण्ण भण्डार है, जो आज भी उपयोगी है।

'आज पुरानी राहों में' इस योजना के माध्यम से हिमाचल प्रदेश सरकार प्रदेश के गौरवपूर्ण इतिहास, लोक जीवन एवं परंपरा, भाषा एवं साहित्य, सांस्कृतिक विरासत, पर्यटन स्थलों के संरक्षण और विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

लुप्तप्रायः हिमाचल की बोलियों का संरक्षण एवं प्रकाशन करना, प्राचीन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के भवनों का पुनरुद्धार करना, पर्यटकों तथा विशिष्ट जनों के लिए स्मृति चिह्न उपलब्ध करवाना तथा लोक कलाकारों को प्रोत्साहन एवं सम्मान प्रदान करना शिल्पग्राम मेले का प्रमुख एवं महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

डॉ. पूर्णिमा चौहान भा.प्र.से.
सचिव (भाषा संस्कृति)
हिमाचल प्रदेश सरकार



आज पुरानी राहों से....

उद्‌देश्य :

- हिमाचल प्रदेश के विभिन्न जनपदों की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण, संवर्धन, प्रचार-प्रसार, प्रलेखन तथा प्रकाशन करना।
- पारंपरिक लोक कलाओं, हस्तशिल्प, पुरातात्त्विक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थलों के इतिहास का संकलन करना तथा मानचित्र तैयार करके प्रकाशित करना।
- युवावर्ग को सांस्कृतिक मार्गदर्शिका का प्रशिक्षण देकर रोज़गार के अवसर उपलब्ध करवाना।
- पर्यटकों, अतिथियों तथा गणमान्य व्यक्तियों को हिमाचली स्मृति चिन्ह भेंट करने हेतु हिमाचली शिल्पकारों से कलाकृतियां बनवाना तथा शिल्पकारों को विक्रय हेतु प्रोत्साहन प्रदान करना।
- केन्द्र सरकार के अनुरूप ''अपनी धरोहर अपनी पहचान'' योजना का कार्यान्वयन।
- सांस्कृतिक स्थलों एवं परिसरों में धूम्रपान एवं नशा सेवन रोकने के लिए प्रयास करना।
- पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए विभिन्न कार्यक्रम संचालित करना।

हिमाचल प्रदेश की प्राचीन लिपियाँ

ब्राह्मी लिपि– ब्राह्मी लिपि का उद्भव एवं विकास सम्राट् अशोक (272–232, ई.पु) के समय में कालसी, गिरनार, कर्णाटक आदि भारतीय क्षेत्रों और श्रीलंका तथा मध्य एशिया तक ब्राह्मी लिपि का प्रसार हुआ। शुंग, कुषाण, गुप्त काल में भी ब्राह्मी लिपि प्रचलन में रही। हिमाचल प्रदेश के भरमौर में मेरु वर्मन के काल में भी ब्राह्मी लिपि के आलेख मिलते हैं। आधुनिक भारतीय लिपियां ब्राह्मी से ही विकसित हुई हैं।

शारदा लिपि– शारदा लिपि का उद्भव शारददेव देश अर्थात् कश्मीर में हुआ। शारदा लिपि का सबसे पुराना शिलालेख सराहां (चम्बा) में मिलता है। चम्बा में 10 वीं शती में शारदा के लेख मिलते हैं। 11–12 वीं सदी में कुछ कश्मीरी पंडित सिरमौर के चौपाल, ठियोग आदि क्षेत्रों में आकर बसे जो शारदा के ग्रन्थ भी अपने साथ लाए।

खरोष्ठी– खरोष्ठी लिपि का उद्भव पश्चिमोत्तर भारत के गांधार क्षेत्र में ईसा पूर्व पांचवीं सदी में हुआ। खरोष्ठी दाईं से बाईं ओर लिखी जाती है। खरोष्ठी में प्राचीनतम लेख अशोक कालीन (272–232 ई.पु.) मानसेहरा में मिलता है। औदुम्बर तथा कुणिंद सिक्कों पर खरोष्ठी के लेख अंकित हैं। 668 ई.पु. तक मध्य एशिया में खरोष्ठी का प्रचलन रहा है।

चंदवाणी– 11 वीं शताब्दी में कश्मीर की रानी के साथ सिरमौर आए परिवार शारदा में लिखित ग्रन्थ अपने साथ लाए और सिरमौर के चौपाल, ठियोग, घूंड आदि क्षेत्रों में बस गए। इन्हीं पण्डितों द्वारा कालांतर में चंदवाणी, पंडवाणी, भटाक्षरी तथा पावुची आदि लिपियों का उद्भव एवं विकास हुआ। चंदवाणी लिपि ज्योतिष, कर्मकांड, तंत्र मंत्र, आयुर्वेद आदि विषयों पर ग्रन्थ रचे, जिन्हें 'सांचा' कहा जाता है।

चौपाल के भटेवड़ी तथा थरोच गांव में भाट चंद्र ज्योतिष के आधार पर 'चंदवाण' हैं और इनकी लिपि चंदवाणी कहलाती है।

पावुची– सिरमौर जनपद में खडकांह, जवलोग और भगनोल गांवों के पंडितों की लिपि पाबुची है तथा इनके पास पावुच लिपि में प्राचीन सांचा उपलब्ध हैं।

पंडवाणी– शिमला जिला के ठियोग तहसील के बलग और चौपाल के मनेवटी व छतरौली गांवों में पांडो की लिपि पंडवाणी कहलाती है। इनके सांचे पंडवाणी में हस्तलिखित हैं।

भट्टाक्षरी– चौपाल के हरिपुरधार, कुणा, वेओग, घटोल और सिद्धयोटी आदि गांवों के भाटों की लिपि भट्टाक्षरी कहलाती है।

लञ्चा लिपि– नेपाल के नेवार खानदान द्वारा ईजाद की गई संस्कृत मूलक लञ्चा लिपि तिब्बत और हिमाचल प्रदेश के लाहुल स्पिति, किन्नौर, पांगी आदि बौद्ध क्षेत्रों में प्रचलित है। बौद्ध विहारों में लिखित मंत्र प्रायः लञ्चा लिपि में ही है।

अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि

अ आ इ उ ए ओ अं

क ख ग घ च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

प फ ब भ म य र ल व

श ष स ह का कि की कु कू

के को क्र त्र त्पा म्य म्हि व्यो स्ति

स्त्रा ब्रा र्वं म्युं ह्म ख्य ढी थै



ब्राह्मी लिपि– ब्राह्मी लिपि का उद्‌भव एवं विकास सम्राट् अशोक (272–232, ई.पु.) के समय में कालसी, गिरनार, कर्णाटक आदि भारतीय क्षेत्रों और श्रीलंका तथा मध्य एशिया तक ब्राह्मी लिपि का प्रसार हुआ। शुंग, कुषाण, गुप्त काल में भी ब्राह्मी लिपि प्रचलन में रही। हिमाचल प्रदेश के भरमौर में मेरु वर्मन के काल में भी ब्राह्मी लिपि के आलेख मिलते हैं। आधुनिक भारतीय लिपियां ब्राह्मी से ही विकसित हुई हैं।

खरोष्ठी लिपि

2

3

4

2. **अशोक का शाहबाजगढ़ी का सातवाँ शिलालेख। दायीं ओर से बायीं ओर यह लेख पढ़ा जायेगा (पंक्तिबद्ध) :**

    देवनं प्रियो प्रियशि रज सव्रत्र इछति
    सव्र प्रषंड वसेयु सवे हि ते सयमे
    भवशुधि च इछंति जनो चु उचवुचछंदो
    उचवुचरगो ते सव्रं व एकदेशं व पि
    कषंति विपुले पि चु दने यस नस्ति सय-
    म भव शुधि किट्रञत द्रिढभतित निचे
    पढं

3. **हिन्द-यवन शासक मिनान्दर के सिक्के पर अंकित खरोष्ठी लेख :**

    महरजस त्रतरस मेनंद्रस

4. **पश्चिमोत्तर भारत के शक शासक मोम के सिक्के पर अंकित खरोष्ठी लेख :**

    रजतिरजस महतस मोअस



खरोष्ठी – खरोष्ठी लिपि का उद्भव पश्चिमोत्तर भारत के गांधार क्षेत्र में ईसा पूर्व पांचवी सदी में हुआ। खरोष्ठी दाईं से बाईं ओर लिखी जाती है। खरोष्ठी में प्राचीनतम लेख अशोक कालीन (272–232 ई.पु.) मानसेहरा में मिलता है। औदुम्बर तथा कुणिंद सिक्कों पर खरोष्ठी के लेख अंकित हैं। 668 ई.पु. तक मध्य एशिया में खरोष्ठी का प्रचलन रहा है।

शारदा लिपि



शारदा लिपि – शारदा लिपि का उद्‌भव शारददेव देश अर्थात् कश्मीर में हुआ। शारदा लिपि का सबसे पुराना शिलालेख सराहां (चम्बा) में मिलता है। चम्बा में 10 वीं शती में शारदा के लेख मिलते हैं। 11–12 वीं सदी में कुछ कश्मीरी पंडित सिरमौर के चौपाल, ठियोग आदि क्षेत्रों में आकर बसे जो शारदा के ग्रन्थ भी अपने साथ लाए।

पावुची लिपि

स्वर

रा	म	स	त	जी	उ	म
स	सि	ति	सि	धा	उ	अं
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए
ऐ	ओ	औ	अं			

व्यञ्जन

क	ख	ग	घ	ई	अं
च	छ	ज	झ	ई	अं
ट	ठ	ड	ढ	ण	
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	जी	

मात्राएं

क	का	कि	कु	के	को	कं

अंक

1	2	3	4	5	6
7	8	9	10		



पावुची – सिरमौर जनपद में खडकांह, जवलोग और भगनोल गांवों के पंडितों की लिपि पाबुची है तथा इनके पास पावुच लिपि में प्राचीन सांचा उपलब्ध हैं।

चंदवाणी लिपि

स्वर

स	म	स	त	जी	यो	म
स	सी	ती	सी	पं		
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ऋ	ले	ल	ए	ऐ	ओ	औ
अं	अः					

व्यञ्जन

क	ख	ग	घ	ङ		
च	छ	ज	झ	ञ		
ट	ठ	ड	ढ	ण		
त	थ	द	ध	न		
प	फ	ब	भ	म		
य	र	ल	व			
श	ष	स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ

मात्राएं

क	का	कि	की	कु	कृ
के	कै	को	कौ	कं	कः

अंक

1	2	3	4	5	6	7
8	9	10				



चंदवाणी – 11 वीं शताब्दी में कश्मीर की रानी के साथ सिरमौर आए परिवार शारदा में लिखित ग्रन्थ अपने साथ लाए और सिरमौर के चौपाल, ठियोग, घूंड आदि क्षेत्रों में बस गए। इन्हीं पण्डितों द्वारा कालांतर में चंदवाणी, पंडवाणी, भटाक्षरी तथा पावुची आदि लिपियों का उद्‌भव एवं विकास हुआ। चंदवाणी लिपि ज्योतिष, कर्मकांड, तंत्र मंत्र, आयुर्वेद आदि विषयों पर ग्रन्थ रचे, जिन्हें 'सांचा' कहा जाता है।

चौपाल के भटेवड़ी तथा थरोच गांव में भाट चंद्र ज्योतिष के आधार पर 'चंदवाण' हैं और इनकी लिपि चंदवाणी कहलाती है।

पंडवाणी लिपि

स्वर

रा	म	स	त	जी	उ	ना	मा
सी	ध	हा	ह	उ	ए	ओ	अं

व्यञ्जन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	

मात्राएं

क	का	का	कि	की	कु
कृ	के	कै	को	कौ	कं

पाण्डवाणी लिपि में आ के लिए दो मात्राएं हैं।

अंक

1	2	3	4	5	6
7	8	9	10		



पंडवाणी – शिमला जिला के ठियोग तहसील के बलग और चौपाल के मनेवटी व छतरौली गांवों में पांडो की लिपि पंडवाणी कहलाती है। इनके सांचे पंडवाणी में हस्तलिखित हैं।

भट्टाक्षरी लिपि

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

प फ ब भ म य र ल व श ष स ह क्ष त्र ज्ञ



भट्टाक्षरी – चौपाल के हरिपुरधार, कुणा, वेओग, घटोल और सिद्धयोटी आदि गांवों के भाटों की लिपि भट्टाक्षरी कहलाती है।

भोट वर्ण माला

स्वर - ཨི་ཨུ་ཨེ་ཨོ།
इ उ ए ओ।

मात्रा - ི ུ ེ ོ
ि ु े ो।

व्यञ्जन

ཀ་ཁ་ག་ང་། ཅ་ཆ་ཇ་ཉ། ཏ་ཐ་ད་ན།
क ख ग ङ। च छ ज ञ। त थ द न।

པ་ཕ་བ་མ། ཙ་ཚ་ཛ་ཝ། ཞ་ཟ་འ་ཡ།
प फ ब म। च़ छ़ ज़ व। ज्य ज़ ऽ य।

ར་ལ་ཤ་ས་ ཧ་ཨ།
र ल श स। ह अ।

अंक - ༡ ༢ ༣ ༤ ༥ ༦ ༧ ༨ ༩ ༡༠
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

༡༡ ༡༢ ༡༣ ༡༤ ༡༥ ༡༦ ༡༧ ༡༨ ༡༩ ༢༠
11 12 13 14 15 16 17 18 19 20

༢༡ ༣༠ ༤༠ ༥༠ ༦༠ ༧༠ ༨༠ ༩༠ ༡༠༠
21 30 40 50 60 70 80 90 100

༡༠༡ ༢༠༠ ༡༠༠༠
101 200 1000



लञ्चा लिपि – नेपाल के नेवार खानदान द्वारा ईजाद की गई संस्कृत मूलक लंचा लिपि तिब्बत और हिमाचल प्रदेश के लाहुल स्पिति, किन्नौर, पांगी आदि बौद्ध क्षेत्रों में प्रचलित है। बौद्ध विहारों में लिखित मंत्र प्रायः लंचा लिपि में ही है।

देवनागरी	ब्राह्मी	शारदा	पाबुची	पपलवाणी	भोटी	टांकरी	चन्दवाणी	भट्टाक्षरी
अ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
इ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ई	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
उ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ऊ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ए	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ऐ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ओ	[illegible]	[illegible]	य	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
औ	[illegible]	[illegible]	यी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
अः	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ऋ		[illegible]	[illegible]					

देवनागरी	ब्राह्मी	शारदा	पावची	पण्डवाणी	भोटी	टांकरी		चंदवाणी	भट्टाक्षरी
क	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ख	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
घ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ङ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
च	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
छ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ज	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
झ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ञ	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

देवनागरी	ब्राह्मी	शारदा	पाबुची	पण्डवाणी	भोटी	टाकरी कांगड़ा	टाकरी कुल्लू	चन्दवाणी	भट्टाक्षरी
ट	𑀝	𑆛	[illegible]	[illegible]		𑚔	𑚔	[illegible]	[illegible]
ठ	𑀞	𑆜	[illegible]	[illegible]		𑚕	𑚕	[illegible]	[illegible]
ड	𑀟	𑆝	[illegible]	[illegible]		𑚖	𑚖	[illegible]	[illegible]
ढ	𑀠	𑆞	[illegible]	[illegible]		𑚗	𑚗	[illegible]	[illegible]
ण	𑀡	𑆟	[illegible]	[illegible]		𑚘	𑚘	[illegible]	[illegible]
त	𑀢	𑆠	[illegible]	[illegible]	[illegible]	𑚙	𑚙	[illegible]	[illegible]
थ	𑀣	𑆡	[illegible]	[illegible]	[illegible]	𑚚	𑚚	[illegible]	[illegible]
द	𑀤	𑆢	[illegible]	[illegible]	[illegible]	𑚛	𑚛	[illegible]	[illegible]
ध	𑀥	𑆣	[illegible]	[illegible]	–	𑚜	𑚜	[illegible]	[illegible]
न	𑀦	𑆤	[illegible]	[illegible]	[illegible]	𑚝	𑚝	[illegible]	[illegible]

देवनागरी	ब्राह्मी	शारदा	पाबुची	पण्डवाणी	भोटी	टाकरी (कांगड़ा)	टाकरी (कुल्लू)	चंदवाणी	भट्टाक्षरी
प	𑀧	𑆥	[illegible]	[illegible]	པ	𑚞	𑚞	[illegible]	[illegible]
फ	𑀨	𑆦	[illegible]	[illegible]	ཕ	𑚟	𑚟	[illegible]	[illegible]
ब	𑀩	𑆧	[illegible]	[illegible]	བ	𑚠	𑚠	[illegible]	[illegible]
भ	𑀪	𑆨	[illegible]	[illegible]		𑚡	𑚡	[illegible]	[illegible]
म	𑀫	𑆩	[illegible]	[illegible]	མ	𑚢	𑚢	[illegible]	[illegible]
य	𑀬	𑆪	[illegible]	[illegible]	ཡ	𑚣	𑚣	[illegible]	[illegible]
र	𑀭	𑆫	[illegible]	[illegible]	ར	𑚤	𑚤	[illegible]	[illegible]
ल	𑀮	𑆬	[illegible]	[illegible]	ལ	𑚥	𑚥	[illegible]	[illegible]
व	𑀯	𑆮	[illegible]	[illegible]	ཝ	𑚦	𑚦	[illegible]	[illegible]
श	𑀰	𑆯	[illegible]		ཤ	𑚧	𑚧	[illegible]	[illegible]

देवनागरी	ब्राह्मी	शारदा	पाबुची	पण्डवाणी	भोटी	टांकरी कांगड़ा	टांकरी कुल्लू	चंदवाणी	भट्टाक्षरी
ष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
स	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ह	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क्ष	[illegible]		[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
त्र	[illegible]		[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ज्ञ	[illegible]		[illegible]			[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

देवनागरी	ब्राह्मी	शारदा	पाबुची	पण्डवाणी	भोटी	टांकरी कांगड़ी	टांकरी कुल्लुई	चंदवाणी	भटाक्षरी
१	—	०	०	०	७	1	1	०	०
२	=	३	३	3	३	3	3	२	3
३	≡	९	३	३	३	३	३	३	३
४	¥	ꝗ	ꞷ	४	४	४	४	४	४
५	৮	ম	~	५	५	4	4	५	५
६	৫	S	ๅ	९	৩	५	५	५	५
७	९	?	९	7	৶	९	९	৬	৬
८	৭	3	८	Z	<	3	3	८	८
९	?	७	७	९	९	6	6	६	६
१०	∝	·/·	01	01	७०	10	10	01	01

सौजन्य : श्री छवीन्द्र शर्मा

मंडी के शिलालेख

पहाड़ी रियासतों में मंडी एक प्रसिद्ध रियासत रही है। इसका मुख्यालय मंडी में ही रहा है। इस रियासत के राजाओं के सती-स्तंभ अब भी विद्यमान हैं। ये सती-स्तंभ शहर से बाहर बिलासपुर-सुकेत को जानेवाली सड़क के किनारे पर हैं। कनिंघम ने इस प्रकार के सात शिलालेखों का वर्णन किया है–

गणेश के एक अन्य मंदिर में, जो पत्थर का बना है, देवता की पीतल की मूर्ति स्थापित है। इसके स्तंभ तल में लेख इस प्रकार है–

1. ओं नमः गणपतये मोशुनाश्व
गोत्रादित्य वश सम्भूत श्री आदित्य वर्मा प्रपौत्रः
2. बाल वर्म देव मू........ पौत्रः
श्री दिवाकर वर्मदेव सूनुना
3. महाराजाधिराज श्री मेरु वर्मणा कारापिता देव वर्मेयम
4. कर्मिणा गुग्गेण

गणपति के लिए नमस्कार। (यह मूति) मोशुनाश्व गोत्र तथा आदित्य वंश के महाराजाधिराज मेरु वर्मा सुपुत्र दिवाकर वर्म देव, पौत्र बाल वर्म देव, प्रपौत्र आदित्य वर्म देव ने अर्पित की है।

मणिमहेश और नरसिंह के मंदिरों के बीच में लकड़ी के एक चबूतरे पर नंदी वृष की मूर्ति है। इसके तल पर दो पंक्तियों का एक लेख अंकित है –

1. प्रासाद मेरु सदृशं हिमवन्तः मरुत्वतः
कृत्वा स्वयं प्रवर कर्म शुभैरनैकेः
ताश्चन्द्र शाल रचितम् नव नाभ नाम
प्रग्रीव कैरछी विध मण्डप नैकचित्रैः।
2. तस्याग्रातो वृषभपीन कपोल कायः
संश्लिश्ट वर्ष काकुदाना ता देव धानः
श्री मेरु वर्म चतुरोदधि कीर्तिरिष
माता पितृः सतत मात्मानु वृद्धेः
कर्ता कर्मिणा गुग्गेण।

महीनो के नाम [illegible]

बैसाख	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ज्येष्ठ	[illegible]	[illegible]	[illegible]		
आषाढ़	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
श्रावण	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
भाद्रपद	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
आश्विन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कार्तिक	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
मार्गशीर्ष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
पौष	[illegible]	[illegible]	[illegible]		
माघ	[illegible]	[illegible]	[illegible]		
फाल्गुन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
चैत्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	

दिनों के नाम [illegible]

सोमवार	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मंगलवार	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
बुधवार	[illegible]	[illegible]		
वीरवार	[illegible]	[illegible]		
शुक्रवार	[illegible]	[illegible]		
शनिवार	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
रविवार	[illegible]	[illegible]	[illegible]	



जमलू देवता के मंदिर में टांकरी लिपि का अभिलेख

चित्र सौजन्य : श्री यतिन शर्मा



विष्णु के मोहरे, सजला (कुल्लू) पर अंकित सिध पाल का अभिलेख, 1500 ई.।
चित्र सौजन्य : डॉ. किशौरी लाल चंदेल



कुल्लू के राजा बहादूर सिंह का
ताम्र पत्र अभिलेख, संवत् 35, 1559 ई.।
चित्र सौजन्य : डॉ. किशौरी लाल चंदेल



हड़िम्बा मंदिर, डुंगरी (मनाली) में राजा
बहादुर सिंह का अभिलेख, संवत् 27, 1551 ई.।
चित्र सौजन्य : डॉ. किशौरी लाल चंदेल



मूरलीधर मंदिर, चैहनी (बंजार) पर
कुल्लू के राजा बिधि सिंह का अभिलेख, 1674–1675 ई.
चित्र सौजन्य : डॉ. किशौरी लाल चंदेल



शेषनाग के मंदिर कलवारी (बंजार) पर
कुल्लू के राजा अजीत सिंह का अभिलेख।
चित्र सौजन्य : डॉ. किशोरी लाल चंदेल

मंडयाली टाकरी के स्वर व्यंजन

स्वर

	आ	इ	ई
ऊ	ऋ	ए	
ओ	औ	अं	
ली			

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	ळ	व
श	ष	स	ह	क्ष
त्र	ज्ञ	श्र	ड़	ढ़

सौजन्य : श्री जगदीश कपूर, मण्डी

राष्ट्रगान टांकरी लिपि में

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

सौजन्य : श्री जगदीश कपूर, मण्डी

देवनागरी से टांकरी लिप्यांतर

अभ्यास के लिये देवनागरी में लिखे वाक्यों को टांकरी में भी लिखा गया है।

बिना मात्रा के वाक्य :-

अमर छत पर चढ़	𑚀𑚢𑚤 𑚐𑚙 𑚞𑚤 𑚏𑚗𑚷
करण घर चल	𑚊𑚤𑚘 𑚍𑚤 𑚏𑚥
छठ मत कर	𑚐𑚕 𑚢𑚙 𑚊𑚤
नमक चख कर परख	𑚝𑚢𑚊 𑚏𑚋 𑚊𑚤 𑚞𑚤𑚋
धरम शरम कर	𑚜𑚤𑚢 𑚧𑚤𑚢 𑚊𑚤
पवन सरक कर चल	𑚞𑚦𑚝 𑚨𑚤𑚊 𑚊𑚤 𑚏𑚥
गरम जल भर	𑚌𑚤𑚢 𑚑𑚥 𑚡𑚤
सब पर करम कर	𑚨𑚠 𑚞𑚤 𑚊𑚤𑚢 𑚊𑚤
बड़ बड़ मत कर	𑚠𑚖𑚷 𑚠𑚖𑚷 𑚢𑚙 𑚊𑚤
चमन अब डर मत	𑚏𑚢𑚝 𑚀𑚠 𑚖𑚤 𑚢𑚙

आ की मात्रा :-

छाता ला	𑚐𑚭𑚙𑚭 𑚥𑚭
कपड़ा साफ कर	𑚊𑚞𑚖𑚷𑚭 𑚨𑚭𑚟 𑚊𑚤
कागज़ पर हाथ रख	𑚊𑚭𑚌𑚑 𑚞𑚤 𑚩𑚭𑚚 𑚤𑚋
छापा खाना आ गया	𑚐𑚭𑚞𑚭 𑚋𑚭𑚝𑚭 𑚁 𑚌𑚣𑚭
घर जाकर खाना खा	𑚍𑚤 𑚑𑚭𑚊𑚤 𑚋𑚭𑚝𑚭 𑚋𑚭
लाला चालाक मत बन	𑚥𑚭𑚥𑚭 𑚏𑚭𑚥𑚭𑚊 𑚢𑚙 𑚠𑚝
यह पटड़ा साफ़ कर	𑚣𑚩 𑚞𑚔𑚖𑚷𑚭 𑚨𑚭𑚟 𑚊𑚤
अब झगड़ा मत कर	𑚀𑚠 𑚒𑚌𑚖𑚷𑚭 𑚢𑚙 𑚊𑚤
पाक साफ बात कर	𑚞𑚭𑚊 𑚨𑚭𑚟 𑚠𑚭𑚙 𑚊𑚤
राम लाल भगवान का नाम जप।	𑚤𑚭𑚢 𑚥𑚭𑚥 𑚡𑚌𑚦𑚭𑚝 𑚊𑚭 𑚝𑚭𑚢 𑚑𑚞

सौजन्य : श्री जगदीश कपूर, मण्डी

लगभग 100 वर्ष पूर्व टांकरी में छपी आर्य संध्या की प्रतिलिपि

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सौजन्य : श्री जगदीश कपूर, मण्डी

हिमाचली (पहाड़ी) भाषा

इतिहास, स्वरूप तथा 8वीं अनुसूचि का प्रस्ताव

हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी भाषा प्राचीनकाल से बोलचाल, साहित्य रचना, लेन-देन तथा व्यवहार की भाषा रही है।

1. पहाड़ी भाषा की प्राचीन लिपियाँ

पहाड़ी भाषा टाकरी, खरोष्ठी, शारदा, भट्टाक्षरी, पाबुची, पंडवाणी, चंदवाणी आदि लिपियों में लिखी जाती रही है। पहाड़ी की वर्तमान लिपि हिन्दी देवनागरी है।

2. पहाड़ी में उपलब्ध शिलालेख

पहाड़ी भाषा में अनेक प्राचीन शिलालेख, ताम्रपत्र तथा सनदें आदि उपलब्ध हैं।

3. पहाड़ी भाषा का इतिहास, विकास तथा बोलियां

पहाड़ी भाषा का उद्भव ऋग्वेदकालीन वैदिक संस्कृत से हुआ है। कालक्रम से लौकिक संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं की विकास यात्रा में अपभ्रंश से शोरसेनी, मागधी, पैशाची आदि भाषाओं में से आधुनिक आर्य भाषाएं जन्मीं।

भारतीय आर्य भाषा परिवार की भीतरी उपशाखा के अंतर्गत पश्चिमी पहाड़ी भाषा का उद्भव एवं विकास हुआ जिसमें सिरमौरी, बघाटी, कुल्लवी, मंडयाली, महासवी, गादी, पंगवाली, चंबयाली, कहलूरी, कांगड़ी, चिनाली, चामड़, हंडूरी, क्योंथली आदि बोलियां पहाड़ी (हिमाचली) भाषा के नाम से प्रचलित हैं।

4. पहाड़ी भाषा का व्याकरण और शब्दकोश

हिमाचली भाषा का व्याकरण तथा हिमाचल प्रदेश के कारक, डिस्क्रपटिव वोकब्युलरी ऑफ चिनाली, डिक्शनरी ऑफ पहाड़ी डायलैक्टस, कांगड़ी सैन्ट्रल सब सिस्टम और डिक्शनरी ऑफ कनावरी आदि पुस्तकें हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी द्वारा प्रकाशित की गई हैं। पं. टीकाराम जोशी द्वारा तैयार किया गया पहाड़ी भाषा का पहाड़ी अंग्रेजी शब्दकोश 1933 में एशियाटिक सोसायटी बंगाल द्वारा छापा गया था जिसे हिमाचल अकादमी द्वारा रीप्रिंट किया गया है।

5. पहाड़ी भाषा के राष्ट्रीय सेमिनार

पहाड़ी भाषा के स्वरूप मानकीकरण तथा भाषा वैज्ञानिक अध्ययन तथा एकरूपता आदि विषयों पर भारतीय भाषा संस्थान मैसूर, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला, भाषा संस्थान बडोदरा तथा केन्द्रीय साहित्य अकादेमी दिल्ली के सहयोग से हिमाचल अकादमी द्वारा विगत वर्षों में अनेक सफल सम्मेलनों का आयोजन किया गया है।

6. हिमाचली पहाड़ी भाषा को केन्द्रीय साहित्य अकादमी की मान्यता

केन्द्रीय साहित्य अकादेमी दिल्ली द्वारा हिमाचल प्रदेश के लेखकों डॉ. गौतम शर्मा, श्री एम आर ठाकुर, डॉ. प्रत्यूष गुलेरी, डॉ. प्रेम लाल भारद्वाज आदि विद्वानों द्वारा लिखित तथा संपादित पुस्तकें हिमाचली पहाड़ी में प्रकाशित की गई हैं तथा साहित्य अकादेमी दिल्ली द्वारा हिमाचल के इन विद्वानों को सम्मानित भी किया गया है।

7. पहाड़ी भाषा एवं साहित्य पुरस्कार

हिमाचल अकादमी द्वारा पहाड़ी साहित्य पुरस्कार रु.51000/- प्रतिवर्ष पहाड़ी भाषा की उत्कृष्ट पुस्तक के लिए एक पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

8. पहाड़ी भाषा का प्रकाशित साहित्य

हिमाचल अकादमी, भाषा संस्कृति विभाग तथा हिमाचल प्रदेश के लेखकों द्वारा पहाड़ी काव्य, कहानी, नाटक, निबंध, शोध समीक्षा आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अब तक लगभग 1500 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं।

9. हिमाचली पहाड़ी भाषा की बोलियों के क्षेत्र तथा भाषाभाषी जनसंख्या का अनुमानित विवरण

क्रम	बोली का नाम	बोली के प्रचलन का क्षेत्र	जनसंख्या 2011
1.	पंगवाली	पांगी तहसील का क्षेत्र	18866
2.	सिरमौरी	सिरमौर जिला	529855
3.	बघाटी	सोलन की बघाट रियासत का क्षेत्र	356556
4.	कुल्लवी	कुल्लू जिला	437903
5.	मंडयाली	मण्डी जिला	999777
6.	महासवी	शिमला जिला	814010
7.	गादी	भरमौर तहसील	539108
8.	पंगवाली	पांगी तहसील	18868
9.	चंबयाली	चंबा जिला	519080
10.	कहलूरी	बिलासपुर जिला	381956
11.	कांगड़ी	कांगड़ा हमीरपुर जिला	2000000
12.	चिनाली	लाहुल का जाहलमा गांव	1500
13.	चामंग	किन्नौर का चामंग समुदाय	1000
14.	हंडूरी	सोलन जिला का नालागढ़ क्षेत्र	20000
15.	क्योंथली	क्योंथल रियासत का क्षेत्र	20000
हिमाचली पहाड़ी भाषा भाषीजनों की कुल जनसंख्या			67499917

10. संस्कृत मूलक पहाड़ी भाषाएं :

हिमाचल प्रदेश के जनजातीय क्षेत्र लाहुल स्पिति के जाहलमा गांव में बोली जाने वाली चिनाली, किन्नौर की चामंग भाषा और पांगी में पंगवाली तथा भरमौर की गादी भाषाएं पूर्णतया संस्कृत मूलक हैं। इसके अतिरिक्त हिमाचल की अन्य भाषाओं में भी अधिकांश शब्द और वाक्य संरचना संस्कृत पर आधारित है।

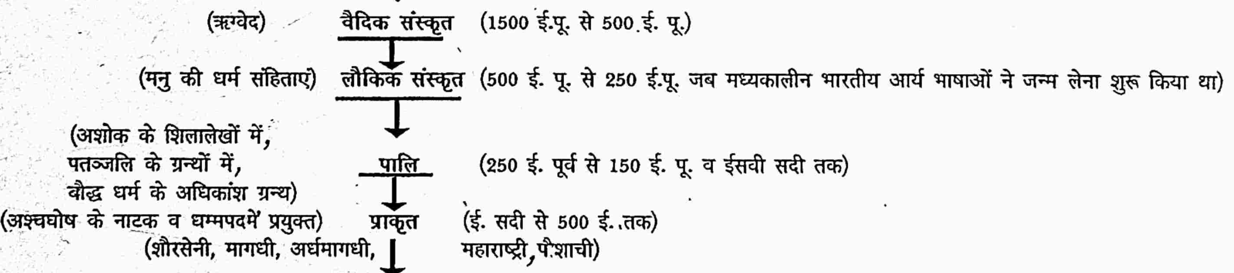
11. पहाड़ी भाषा में उपलब्ध पांडुलिपियां

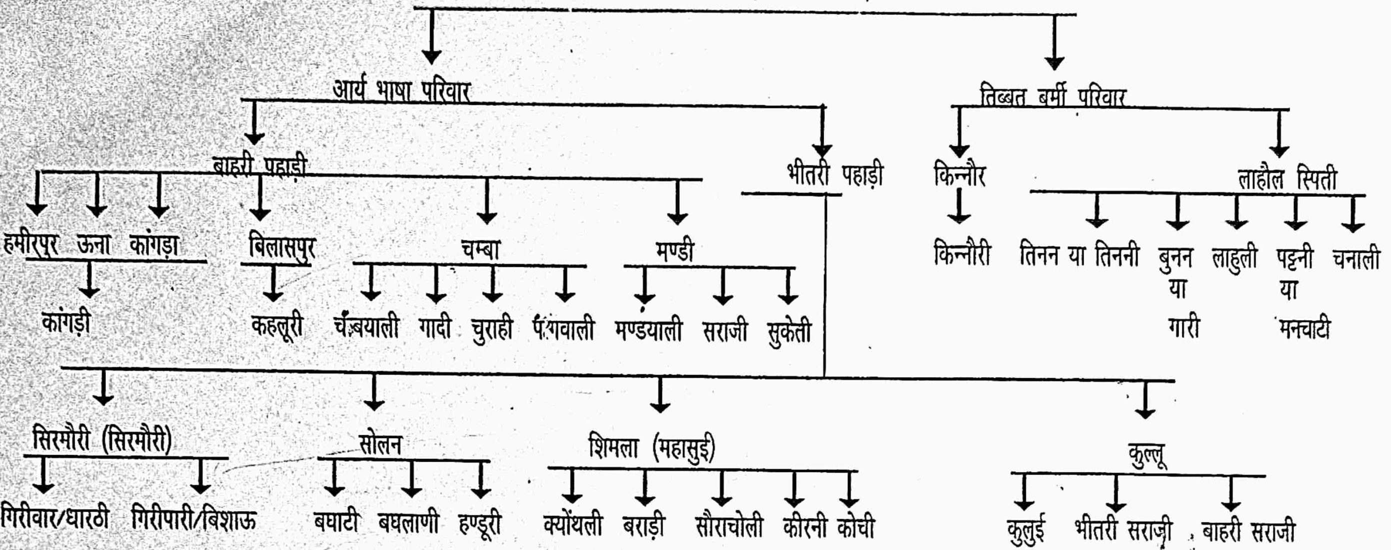
इंदिरा गांधी कला केन्द्र, दिल्ली राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन द्वारा हिमाचल अकादमी में स्थापित पांडुलिपि रिसोर्स सैंटर के माध्यम से किए गए सर्वेक्षण में हिमाचल प्रदेश के राज्य संग्रहालयों, अकादमी पुस्तकालय, सार्वजनिक पुस्तकालयों तथा निजी संग्रहों में पहाड़ी भाषा की टांकरी, पाबुची, पंडवाणी, चंदवाणी, भट्टाक्षरी, भोटी आदि लिपियों में असंख्य प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपियां उपलब्ध है।

12. पहाड़ी भाषा को 8 वीं अनुसूचि में शामिल करने का प्रस्ताव

अतः पहाड़ी भाषा में प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं, पुस्तकों, प्राचीन पांडुलिपियों और बोलचाल के आधार पर हिमाचली भाषा को संविधान की 8वीं अनुसूचि में शामिल किए जाने का प्रस्ताव है।

हिमाचली भाषा का उद्भव-विकास




[चंबा में टांकरी-लिपि में उपलब्ध प्राचीनतम ताम्रपत्र
(गरोली ब्राह्मण को जमीन शासन के रूप में देने का पट्टा (अधिकारपत्र)]
हिमाचली भाषा (1330 ईसवी)
आर्य भाषा परिवार
तिब्बत बर्मी परिवार
बाहरी पहाड़ी
भीतरी पहाड़ी
किन्नौर
लाहौल स्पिती
हमीरपुर ऊना कांगड़ा
बिलासपुर
चम्बा
मण्डी
कांगड़ी
कहलूरी
चँम्बयाली गादी चुराही पंगवाली
मण्डयाली सराजी सुकेती
किन्नौरी
तिनन या तिनमी
बुनन या गारी
लाहुली
पट्नी या मन्चाटी
चनाली
सिरमौरी (सिरमौरी)
गिरीवार/धारठी गिरीपारी/बिशाऊ
सोलन
बघाटी बघलाणी हण्डूरी
शिमला (महासुई)
क्योंथली बराड़ी सौराचोली कीरनी कोची
कुल्लू
कुलुई भीतरी सराजी बाहरी सराजी
संकलन : डॉ. श्यामा वर्मा



चम्बा ज़िला के भरमौर में लकड़ी के बने प्राचीन मंदिर में
लक्षणा देवी की पीतल की मूर्ति पर शिलालेख अंकित है।



प्रकाशक : हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला-171001 (हि.प्र.)
संपादक : डॉ. कर्मसिंह, सचिव अकादमी
दूरभाष: 0177-2624330, 94184-70345
ई-मेल: hpstateacademy@gmail.com
संकलन: श्री देवराज शर्मा
संस्करण : 2018 मूल्य : रू.150/-
मुद्रक : डिज़ाईन इंडिया, पावर हाउस, न्यू टुटू, शिमला-11 मो.: 93180-17070, 82190-58913